अनर्घराघव में वैदिक सन्दर्भ

डॉ0 आरूणेय मिश्र

काव्य कवि की प्रतिभा और पाण्डित्य दोनों का द्योतक होता है। अनर्घराघव में भी मुरारि के वैदुष्य की झलक स्थान–स्थान पर दिखायी पड़ती है। मुख्य रूप से वेद, वेदांग, राजनीति, दर्शन कामशास्त्र की बातों का विवेचन और उनका समावेश अधिक देखा जा सकता है।

अनर्घराघव में ऐसे अधिकांश स्थल है जहाँ कवि ने वैदिक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है। उनका प्रयोग उपमादि अलंकारों में भी हुआ है। इससे मुरारि के वैदिक ज्ञान का पता स्पष्ट रूप से चलता है।